This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

# ASSIGNMENT

# BPSC - 114

**Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)**

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

**A. No Guarantee of Examination Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

**B. Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

**C. Use as a Study Materials :** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

**D. Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) …….visit our website www.ignouiqhindi.com

**हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286**

BPSC-114 : पारंपरिक राजनीतिक दर्शन - II

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: BPSC-114

सत्रीय कार्य कोड: BPSC-114/ASST/TMA/2025-26

अधिकतम अंकः 100

# BPSC-114 : पारंपरिक राजनीतिक दर्शन –II

## अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BPSC-114**
सत्रीय कार्य कोड : **BPSC-114/ASST/TMA/2025-26**
अधिकतम अंकः **100**

**इस सत्रीय कार्य के तीन भाग हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।**

## सत्रीय कार्य – I

**निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।**

1) आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के उद्भव का पता लगाइए। 20

2) राजा राममोहन रॉय के धार्मिक सुधारों की चर्चा कीजिए। 20

## सत्रीय कार्य – II

**निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 260 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।**

1) ईसाईयत (Christianity) से पंडिता रमाबाई के साक्षात्कार की जाँच कीजिए। 10

2) स्वामी विवेकानन्द के परिवेश और उन पर उसके प्रभावों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। 10

3) गांधी द्वारा परंपराओं की आलोचना क्या थी? व्याख्या कीजिए। 10

## सत्रीय कार्य – III

**निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।**

1) राष्ट्र निर्माण में नेहरू द्वारा वैज्ञानिक संस्कृति को दी गई प्रमुखता पर प्रकाश डालिए। 6

2) लोहिया के राजनीतिक विचारों की चर्चा कीजिए। 6

3) एम. एन. रॉय की मार्क्सवाद की आलोचना की जाँच कीजिए। 6

4) इकबाल द्वारा राष्ट्रवाद की आलोचना का विस्तापूर्वक वर्णन कीजिए। 6

5) हिन्दुत्व (वी. डी. सावरकर) क्या है? व्याख्या कीजिए। 6

## सत्रीय कार्य – I

**निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।**

### 1) आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के उद्भव का पता लगाइए।

उत्तर : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन का उदय 18वीं सदी के अंत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के कारण हुआ, जिसने शिक्षा की शुरुआत जैसी नीतियों के माध्यम से भारतीय समाज में महत्वपूर्ण बदलाव लाए। इस सोच ने पारंपरिक भारतीय विचारों को आधुनिक पश्चिमी राजनीतिक अवधारणाओं, जैसे कि उदारवाद और लोकतंत्र, के साथ मिलाया, जिसके परिणामस्वरूप राजा राममोहन राय और अन्य सुधारकों के माध्यम से भारतीय पुनर्जागरण हुआ, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण की आलोचना करने के साथ-साथ भारतीय समाज में सुधार भी करना चाहते थे।

**मुख्य कारक और प्रभाव:**

- **औपनिवेशिक शासन और प्रतिरोध:** ब्रिटिश शासन के कारण शुरू हुई आधुनिकता ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध को जन्म दिया और इसने आधुनिक राजनीतिक सोच के विकास को बढ़ावा दिया।
- **भारतीय पुनर्जागरण:** राजा राममोहन राय जैसे सुधारकों ने पश्चिमी शिक्षा के संपर्क में आने के बाद सती जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने और पारंपरिक भारतीय संस्कृति को आधुनिक बनाने के लिए संघर्ष किया, जिससे भारतीय पुनर्जागरण का दौर शुरू हुआ।
- **राष्ट्रीय आंदोलन:** जैसे-जैसे राष्ट्रीय आंदोलन तेज हुआ, आधुनिक राजनीतिक चिंतन ने राष्ट्रवाद और स्वशासन के विचारों को मजबूत किया, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाना था।
- **विभिन्न वैचारिक धाराएँ:** आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में उदारवादी सुधारकों, रूढ़िवादियों, मानवतावादियों और सामाजिक न्याय के समर्थकों जैसे विभिन्न विचारकों के विचारों को शामिल किया गया, जिससे यह एक जटिल और विविध विचार बन गया।

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, 19वीं और 20वीं सदी में ब्रिटिश शासन के दौरान उभरे राजनीतिक विचारों का एक संग्रह है। यह भारतीय समाज और राजनीति को समझने के लिए पारंपरिक और पश्चिमी विचारों के मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार और राष्ट्रवाद के विचार प्रमुख हैं। राजा राम मोहन राय, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर और बी.आर. अंबेडकर जैसे विचारकों ने इसे आकार दिया।

**प्रमुख विशेषताएँ और विषय**

- **उपनिवेशवाद का विरोध:**

यह विचार ब्रिटिश शासन का विरोध करने और स्वशासन प्राप्त करने के लिए प्रेरित था।

- **राष्ट्रवाद:**

इसमें राष्ट्र के निर्माण और एकता पर जोर दिया गया था।

- **सामाजिक और धार्मिक सुधार:**

राजा राम मोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने समाज की कुरीतियों को दूर करने पर ध्यान केंद्रित किया।

- **लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता:**

आधुनिक भारतीय चिंतन में लोकतांत्रिक आदर्शों, समावेशी शासन और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा को बढ़ावा दिया जाता है।

- **सामाजिक न्याय और कल्याण:**

इसमें सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने और गरीबी उन्मूलन के लिए राज्य की भूमिका पर बल दिया गया है।

- **वैश्विक प्रासंगिकता:**

इसने अहिंसा, सतत विकास और बहुसंस्कृतिवाद जैसे विचारों में योगदान दिया है।

**आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के उदय के कारण**

- **भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन:**

19वीं सदी में हुए धार्मिक और सामाजिक सुधारों के आंदोलन ने आधुनिक विचारों को बढ़ावा दिया।

- **राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन:**

आजादी के लिए संघर्ष के दौरान भारतीय नेताओं ने देश के भविष्य के लिए अपने विचार और योजनाएं विकसित कीं।

- **पश्चिमी विचारों से संपर्क:**

ब्रिटिश शासन के कारण भारत में यूरोपीय विचारों और रहन-सहन का प्रभाव पड़ा, जिससे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए।

## 2) राजा राममोहन रॉय के धार्मिक सुधारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर : राजा राममोहन रॉय के धार्मिक सुधारों में एकेश्वरवाद का प्रचार, मूर्तिपूजा और कर्मकांडों का विरोध, तथा सभी धर्मों की एकता पर जोर देना शामिल था। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए 1828 में **ब्रह्म समाज** की स्थापना की। इन सुधारों का उद्देश्य हिंदू धर्म को तार्किक और नैतिक बनाना था, जो अंधविश्वासों और पाखंड से मुक्त हो।

**मुख्य धार्मिक सुधार**

- **एकेश्वरवाद का प्रचार:** रॉय एक ईश्वर में विश्वास करते थे और उन्होंने एकेश्वरवाद का प्रचार किया। उन्होंने हिंदू धर्म में सुधार लाने के लिए बहुदेववाद और अवतारवाद का विरोध किया।
- **मूर्तिपूजा और कर्मकांडों का विरोध:** उन्होंने मूर्तिपूजा, पुरोहितवाद, बलि प्रथा और जटिल धार्मिक अनुष्ठानों को समाप्त करने का प्रयास किया, क्योंकि उनका मानना था कि धर्म का सार कर्मकांडों में नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षाओं में है।
- **धार्मिक सहिष्णुता:** रॉय ने धार्मिक कट्टरता का विरोध किया और सभी धर्मों की एकता पर बल दिया। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के प्रति सम्मान की वकालत की।

- **ब्रह्म समाज की स्थापना:** 1828 में, रॉय ने ब्रह्म सभा की स्थापना की, जिसे बाद में ब्रह्म समाज के नाम से जाना गया। इसका उद्देश्य एकेश्वरवाद को बढ़ावा देना और धार्मिक पाखंडों को समाप्त करना था। ब्रह्म समाज प्रार्थना, ध्यान और धर्मग्रंथों के पठन-पाठन पर केंद्रित था।
- **तर्क और नैतिकता पर जोर:** रॉय ने धार्मिक प्रथाओं को तर्कसंगत और नैतिक मूल्यों के अनुरूप बनाने पर जोर दिया। उनका मानना था कि धर्म को अंधविश्वासों से मुक्त होकर समाज के नैतिक उत्थान में योगदान देना चाहिए।
- **अन्य धर्मों का अध्ययन:** रॉय ने कुरान और ईसाई धर्मग्रंथों सहित विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया और उनसे प्रभावित हुए, लेकिन उन्होंने धार्मिक कट्टरता के बजाय सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया।
- राम मोहन राय पश्चिमी आधुनिक विचारों से बहुत प्रभावित थे और बुद्धिवाद तथा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल देते थे।
- राम मोहन राय की तात्कालिक समस्या उनके मूल निवास बंगाल के धार्मिक और सामाजिक पतन की थी।
- उनका मानना था कि धार्मिक रूढ़िवादिता सामाजिक जीवन को क्षति पहुँचाती है और समाज की स्थिति में सुधार करने के बजाय लोगों को और परेशान करती है।
- राजा राम मोहन राय ने निष्कर्ष निकाला कि धार्मिक सुधार, सामाजिक सुधार और राजनीतिक आधुनिकीकरण दोनों हैं।
- राम मोहन का मानना था कि प्रत्येक पापी को अपने पापों के लिये प्रायश्चित करना चाहिये और यह आत्म-शुद्धि और पश्चाताप के माध्यम से किया जाना चाहिये न कि आडंबर और अनुष्ठानों के माध्यम से।
- वह सभी मनुष्यों की सामाजिक समानता में विश्वास करते थे और इस तरह से जाति व्यवस्था के प्रबल विरोधी थे।
- राम मोहन राय इस्लामिक एकेश्वरवाद के प्रति आकर्षित थे। उन्होंने कहा कि एकेश्वरवाद भी वेदांत का मूल संदेश है।
- एकेश्वरवाद को वे हिंदू धर्म के बहुदेववाद और ईसाई धर्मवाद के प्रति एक सुधारात्मक कदम मानते थे। उनका मानना था कि एकेश्वरवाद ने मानवता के लिये एक सार्वभौमिक मॉडल का समर्थन किया है।
- राजा राम मोहन राय का मानना था कि जब तक महिलाओं को अशिक्षा, बाल विवाह, सती प्रथा जैसे अमानवीय रूपों से मुक्त नहीं किया जाता, तब तक हिंदू समाज प्रगति नहीं कर सकता।

## सत्रीय कार्य – II

**निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 260 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।**

**1) ईसाईयत (Christianity) से पंडिता रमाबाई के साक्षात्कार की जाँच कीजिए।**

उत्तर : **रमाबाई का ईसाई धर्म में रूपांतरण और ईसाईयत के प्रति उनका दृष्टिकोण**

- **ईसाई धर्म अपनाने का कारण:** रमाबाई ने हिंदू धर्म की सामाजिक बुराइयों से निराश होकर और ईसाई मिशनरियों के संपर्क में आने के बाद ईसाई धर्म अपनाया।
- **धार्मिक दृष्टिकोण:** उन्होंने एक बार फिर ईसाई धर्म की शिक्षाओं की जांच की, और बाद में उन्होंने खुद को यीशु को समर्पित कर दिया।
- **स्वतंत्र विचार:** ईसाई धर्म अपनाने के बावजूद, उन्होंने पुरुष-प्रधान चर्च को मानने से इनकार कर दिया और केवल बाइबिल के अधिकार को स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि वह भारतीय पुरोहित वर्ग के बंधनों से खुद को मुक्त कर चुकी हैं, और अब वह किसी अन्य बंधन में बंधने के लिए तैयार नहीं हैं।
- **लेखन और भाषण:** उन्होंने अपनी पुस्तक "द हाई कास्ट हिंदू वूमन" में भारत में महिलाओं की स्थिति के बारे में लिखा और शिकागो के धर्म सम्मेलन में विवेकानंद के विचारों का विरोध किया, खासकर महिलाओं के बारे में उनके विचारों पर।
- **सामाजिक कार्य:** ईसाई धर्म में परिवर्तन के बाद, उन्होंने अपना ध्यान अकाल और अन्यग्रंथों से प्रभावित महिलाओं और अनाथों के लिए मुक्ति मिशन की स्थापना पर केंद्रित किया।

पंडिता रमाबाई ने ईसाई धर्म अपनाने के अपने निर्णय के बारे में कोई साक्षात्कार नहीं दिया, बल्कि उन्होंने **अपने अनुभव और विचारों के आधार पर कई किताबें लिखीं और भाषण दिए, जिनमें 'द हाई कास्ट हिंदू वूमन' (The High Caste Hindu Woman)** शामिल है। उन्होंने **ईसाई धर्म को हिंदू धर्म की सामाजिक बुराइयों, जैसे बाल विवाह और महिला उत्पीड़न, से मुक्त होने के एक तरीके के रूप में देखा**। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वह ईसाई मिशनरियों के हर आदेश को नहीं मानेंगी और अपनी स्वतंत्रता बनाए रखेंगी।

## 2) स्वामी विवेकानन्द के परिवेश और उन पर उसके प्रभावों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

- उत्तर : **पारिवारिक और प्रारंभिक जीवन:** नरेंद्रनाथ दत्ता (बाद में स्वामी विवेकानंद) का जन्म 1863 में कोलकाता में एक उच्च-मध्यम वर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता, विश्वनाथ दत्त, एक वकील थे और माँ, भुवनेश्वरी देवी, एक धार्मिक महिला थीं। इसने उन्हें पश्चिमी और पूर्वी विचारों को एक साथ समझने की क्षमता दी।
- **शिक्षा और ज्ञान की प्यास:** वे एक असाधारण छात्र थे और इतिहास, संस्कृत और दर्शनशास्त्र में उनकी विशेष रुचि थी। जीवन के गूढ़ प्रश्नों पर उनके सवाल पूछने की आदत उन्हें जल्द ही ज्ञान की खोज में ले गई।
- **धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण:** विवेकानंद का मननशील और विचारशील स्वभाव था। एक ओर, वे धार्मिक शिक्षाओं को गहराई से समझते थे, और दूसरी ओर, वे पश्चिमी विचारधारा और विज्ञान के प्रति भी गहरी रुचि रखते थे।
- **रामकृष्ण परमहंस का प्रभाव:** रामकृष्ण परमहंस से मिलने के बाद उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। परमहंस की शिक्षाओं ने उनके जीवन को एक स्पष्ट दिशा दी और वे अपने जीवन के उद्देश्य और मार्ग पर पूरी तरह से अग्रसर हुए।
- **समाज सुधार की भावना:** बचपन से ही विवेकानंद के मन में भारतीय समाज की बेहतरी की भावना थी। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, भेदभाव और असमानता के खिलाफ आवाज उठाई और भारत को फिर से जगाने की आवश्यकता महसूस की।

- **राष्ट्रीयता और एकता की भावना:** संन्यासी बनने के बाद उन्होंने पूरे भारत में यात्रा की और देश भर के लोगों के बीच "अस्तित्व की दिव्य एकता और विविधता में एकता" का संदेश फैलाया।
- **विश्व मंच पर भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व:** शिकागो में विश्व धर्म संसद (1893) में उनके भाषण ने अमेरिका और दुनिया भर में हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने "अमेरिका की बहनों और भाइयों" के रूप में शुरुआत करते हुए सार्वभौमिक भाईचारे और धार्मिक सहिष्णुता का संदेश दिया।

संक्षेप में, स्वामी विवेकानंद के परिवेश ने उन्हें पश्चिमी विज्ञान और भारतीय आध्यात्मिकता के एक अनूठे मिश्रण से परिचित कराया, जो बाद में रामकृष्ण परमहंस से उनकी भेंट के साथ मिलकर उनके व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन के सभी पहलुओं में एक गहरा प्रभाव साबित हुआ।

## 3) गांधी द्वारा परंपराओं की आलोचना क्या थी? व्याख्या कीजिए।

उत्तर : गांधी की परंपराओं की आलोचना इस बात पर आधारित थी कि परंपराएं नैतिक जांच से परे नहीं हैं और उनका सुधार होना चाहिए। उन्होंने पुरानी और गलत प्रथाओं को चुनौती दी, जैसे अस्पृश्यता, और नैतिक मूल्यों और आधुनिकता को मिलाकर एक नई परंपरा की वकालत की, जो सत्य और अहिंसा पर आधारित हो।

### गांधी द्वारा परंपराओं की आलोचना

- **नैतिक मूल्यांकन:** गांधी मानते थे कि किसी भी परंपरा को नैतिक रूप से परखा जा सकता है। जो परंपराएं न्यायसंगत नहीं हैं, उन्हें खत्म किया जाना चाहिए, भले ही वे सदियों पुरानी हों।
- **अस्पृश्यता की आलोचना:** गांधी ने अपने साथी हिंदुओं की "अछूतों" के साथ वैसा ही व्यवहार करने के लिए कड़ी आलोचना की, जैसा कि अंग्रेज भारतीयों के साथ करते थे। उनके लिए, यह एक नैतिक बुराई थी जिसे तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए था।
- **आधुनिकता की मिश्रित आलोचना:** गांधी ने आधुनिकता के पश्चिमी विचार की आलोचना की, खासकर उसके सुखवादी और भौतिकवादी पहलुओं की। उन्होंने परंपरा के विचार को आधुनिकता के साथ जोड़कर एक नया, नैतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।
- **शाश्वत सिद्धांतों और अस्थायी प्रथाओं के बीच अंतर:** गांधी ने धर्म के शाश्वत सिद्धांतों और सदियों से जमा हुई अस्थायी प्रथाओं के बीच अंतर किया। उन्होंने शाश्वत मूल्यों का सम्मान किया, लेकिन प्रथाओं को नैतिक सुधार के लिए खुला रखा।
- **वैकल्पिक परंपरा का निर्माण:** गांधी ने सत्य और अहिंसा पर आधारित एक वैकल्पिक परंपरा का प्रस्ताव रखा। उन्होंने खादी जैसे प्रतीकों का उपयोग करके लोगों को गरीबों और कमजोरों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया, और राष्ट्रवाद की पश्चिमी अवधारणा के बजाय एक नैतिक और समावेशी राष्ट्रवाद की वकालत की।

## सत्रीय कार्य III

**निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।**

**1) राष्ट्र निर्माण में नेहरू द्वारा वैज्ञानिक संस्कृति को दी गई प्रमुखता पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर : राष्ट्र निर्माण में जवाहरलाल नेहरू ने वैज्ञानिक संस्कृति को प्राथमिकता दी, क्योंकि उन्होंने विज्ञान और तर्कसंगत सोच को आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता और सामाजिक परिवर्तन का मुख्य साधन माना। उन्होंने वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की नींव रखने और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आम जनता तक पहुँचाने के लिए संस्थान स्थापित किए। इससे भारत की औद्योगिक और तकनीकी प्रगति को गति मिली और एक तर्कसंगत व धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाने में मदद मिली।

**वैज्ञानिक संस्कृति को प्रमुखता देने के प्रमुख बिंदु:**

- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा:** नेहरू ने हर नागरिक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने पर जोर दिया, जो समस्याओं को तर्कसंगत और व्यवस्थित तरीके से देखने में मदद करता है।
- **वैज्ञानिक और तकनीकी संस्थान:** उन्होंने वैज्ञानिक संस्थानों और नए आविष्कार को बढ़ावा देने के लिए कई संस्थानों की स्थापना की, जैसे कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs)।
- **औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण:** विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत को आत्मनिर्भर बनाने और औद्योगीकरण के पथ पर अग्रसर करने के लिए उन्होंने भारी निवेश किया और मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया।

**2) लोहिया के राजनीतिक विचारों की चर्चा कीजिए।**

उत्तर : **सामाजिक और राजनीतिक विचार**

- **समाजवाद:** लोहिया का समाजवाद केवल आर्थिक समानता तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक न्याय भी शामिल था।
- **जातिवाद विरोधी संघर्ष:** उन्होंने जातिगत असमानता को भारत की प्रगति के लिए एक बड़ी बाधा माना और इसे समाप्त करने के लिए 'रोटी और बेटी' जैसे विचारों को सामने रखा।
- **'चौखंबा राज्य' की अवधारणा:** उन्होंने सत्ता के केंद्रीकरण का विरोध किया और 'चौखंबा राज्य' की वकालत की, जिसमें राजनीतिक और आर्थिक सत्ता राज्य, प्रांत, जिला और ग्राम स्तर पर विकेंद्रीकृत हो। इसके साथ ही, पांचवें स्तंभ के रूप में उन्होंने 'विश्व राज्य' की भी कल्पना की।
- **नागरिक स्वतंत्रता:** वे वाणी, समुदाय बनाने और निजी जीवन की स्वतंत्रता के पक्के समर्थक थे और मानते थे कि सरकार को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

**आर्थिक विचार**

- **औद्योगीकरण का विरोध:** उन्होंने बेरोजगारी बढ़ाने वाली बड़ी मशीनों का विरोध किया और छोटी मशीनों के उपयोग का समर्थन किया।

- **आर्थिक विकेंद्रीकरण:** चौखंबा राज्य की अवधारणा के तहत उन्होंने आर्थिक शक्ति को निचले स्तरों पर बांटने की वकालत की।

## 3) एम. एन. रॉय की मार्क्सवाद की आलोचना की जाँच कीजिए।

उत्तर : एम. एन. रॉय ने मार्क्सवाद की आलोचना की क्योंकि उनका मानना था कि यह व्यक्ति की स्वायत्तता को दबाता है, इतिहास की आर्थिक व्याख्या करता है, और सोवियत संघ में राष्ट्रवाद और अधिनायकवाद में बदल गया है। उन्होंने मार्क्सवाद के आर्थिक नियतिवाद को खारिज कर दिया और यह तर्क दिया कि सामाजिक विकास में विचारों और मानव बुद्धि की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रॉय के अनुसार, सच्ची क्रांति विचार में बदलाव से आती है, न कि केवल राजनीतिक या आर्थिक परिवर्तन से।

**एम. एन. रॉय की मार्क्सवाद की आलोचना के मुख्य बिंदु:**

- **आर्थिक नियतिवाद की आलोचना:** रॉय ने मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद को 'आर्थिक नियतिवाद' कहा, जो इतिहास को आकार देने में विचारों और मानवीय रचनात्मकता की भूमिका को अनदेखा करता है।
- **व्यक्ति की स्वायत्तता का निषेध:** रॉय का मानना था कि मार्क्सवाद व्यक्ति को समूह के हिस्से के रूप में देखता है, जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता का हनन होता है।
- **सोवियत संघ पर आलोचना:** उन्होंने तर्क दिया कि सोवियत संघ में साम्यवाद राष्ट्रवाद और अधिनायकवाद में बदल गया था। उनका कहना था कि वहां श्रमिकों का शोषण जारी था, भले ही उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण हो गया हो।
- **द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का खंडन:** रॉय ने मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की आलोचना की, जिसे उन्होंने भौतिकवाद के बजाय एक प्रकार का आदर्शवाद माना।

## 4) इकबाल द्वारा राष्ट्रवाद की आलोचना का विस्तापूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर : अल्लामा इक़बाल ने राष्ट्रवाद की आलोचना इसलिए की क्योंकि वे मानते थे कि यह धर्मनिरपेक्षता, पश्चिमीकरण और आधुनिकता को बढ़ावा देता है, जो इस्लामी एकता और मूल्यों के विपरीत है। उन्होंने राष्ट्रवाद को 'उम्माह' (एक सार्वभौमिक मुस्लिम समुदाय) के विभाजनकारी सिद्धांत के रूप में देखा और इसके स्थान पर धर्म पर आधारित साझा पहचान और एकता को बढ़ावा देने का समर्थन किया। उनकी आलोचना पश्चिमी आधिपत्य, आधुनिकता, और व्यक्तिगत या क्षेत्रीय पहचान को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रवाद के विरोध में थी।

**इकबाल की राष्ट्रवाद की आलोचना के प्रमुख बिंदु:**

- **धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का विरोध:** इक़बाल ने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद की पश्चिमी अवधारणा का विरोध किया, जो धर्म को एक निजी मामला मानता है और इसे सामाजिक व राजनीतिक जीवन से अलग करता है।

- **इस्लामी एकता का महत्व:** उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतीय मुसलमानों द्वारा धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद को स्वीकार करने से इस्लामी समुदाय बिखर जाएगा। उन्होंने 'उम्माह' के विचार का समर्थन किया, जो इस्लामी एकता पर आधारित एक साझा पहचान है जो नस्ल, भाषा या क्षेत्र से ऊपर है।

## 5) हिन्दुत्व (वी. डी. सावरकर) क्या है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर : विनायक दामोदर सावरकर द्वारा दी गई हिंदुत्व की विचारधारा एक सांस्कृतिक-राजनीतिक विचारधारा है, जिसके अनुसार 'हिंदू' वह व्यक्ति है जो भारत को अपनी पितृभूमि (पूर्वजों की भूमि) और पुण्यभूमि (पवित्र भूमि) मानता है। यह केवल धार्मिक विश्वास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे एक राष्ट्र की पहचान के रूप में देखा जाता है जो भौगोलिक, जातीय और सांस्कृतिक एकता पर आधारित है। सावरकर ने इसे 'हिंदू-पन' या 'हिंदू होने की गुणवत्ता' के रूप में परिभाषित किया है, जो भारत की संपूर्ण सभ्यतागत विरासत है।

### हिंदुत्व के मुख्य स्तंभ

- **भौगोलिक एकता:** सावरकर के अनुसार, एक सच्चा हिंदू वह है जो 'आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता' (सिंधु से समुद्र तक) भारत की भूमि को अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता है।
- **जातीय गुण (रक्त):** यह साझा पूर्वजों और जातीय संबंधों पर आधारित एक पहचान है, जो सभी हिंदुओं को जोड़ती है।
- **साझा संस्कृति:** इसमें संस्कृत और हिंदी जैसी साझा भाषाएँ और संस्कृति शामिल हैं, जो इस राष्ट्र को एक साथ बांधती हैं।

### अन्य महत्वपूर्ण बिंदु

- **धार्मिक विश्वास से परे:** सावरकर के अनुसार, हिंदुत्व केवल धार्मिक विश्वास नहीं है; कोई व्यक्ति वेद में विश्वास किए बिना भी सच्चा हिंदू हो सकता है।
- **एकजुटता का भाव:** इसका उद्देश्य जाति और संप्रदाय के आधार पर विभाजन को कम करके हिंदुओं को एकजुट करना है।

IGNOU IQ Hindi

# ZOOM CLASS

*All courses are available*

**PACKAGE DETAILS**

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

**JOIN NOW**

**CONTACT US**
**6205717642/8521027286**

**www.ignouiqhindi.Com**

# GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

## GUESS PAPER

## BPSC - 103

**Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)**

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

**A. No Guarantee of Examination Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

**B. Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

**C. Use as a Study Materials :** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

**D. Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

**Our Website**
Www.ignouiqhindi.Com

**Phone Number**
6205717642/8521027286